E Content for students of Patliputra University
B.A(Hons),Part-2, Paper 4
Subject- Philosophy

Title/Heading of Topic-"बर्कले द्वारा जड़ तत्व का खण्डन"

डॉ. राज नारायण सिंह
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

बर्कले जड़-तत्व के खण्डन के लिये निम्नलिखित युक्तियाँ देते है-

१. लॉक गुणों के आधार या आश्रय रूप में जड़ तत्व की सत्ता स्वीकार करते है, परन्तु गुणों के आधार का अर्थ क्या है? यहाँ आधार या आश्रय शब्द प्रचलित या शाब्दिक अर्थ में स्वीकार नहीं किया गया है। लॉक स्वयं कहते है कि जिस प्रकार भवन स्तम्भों पर आश्रित होता है उसी प्रकार जड़ तत्व गुणो पर आश्रित नहीं होता है। इससे स्पष्ट है कि यहाँ आश्रय का अर्थ भौतिक आश्रय या आधार नहीं, क्योंकि भौतिक रूप में जड़-तत्व का प्रत्यक्ष हमें नहीं होता अतः लॉक कहते है कि हम नहीं जानते कि जड़-तत्व क्या है (I do not know what is mater)| इससे सिद्ध होता है कि जड़-तत्व की सामान्य सत्ता (Being in general) है। इस सामान्य सत्ता के विज्ञान (Ideas) से गुणों का विज्ञान संयुक्त है परन्तु सामान्य सत्ता का विज्ञान तो केवल एक अमूर्त प्रत्यय है जो स्वतः असिद्ध है। अत: गुणों के आधार का अर्थ स्पष्ट नहीं।

२. लॉक का कहना है कि जड़ द्रव्य मन के बाहर है। यदि मन के बाहर बाह्य पदार्थ है तो इन्हें हम कैसे जान सकते है? हम दो ही प्रकार से इन्हें जान सकते हैं इन्द्रिय प्रत्यक्ष रूप में या बुद्धि द्वारा अनुमान रूप में इन्द्रियों से हमें जिस वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है उसे हम चाहे जिस नाम से पुकारे परन्तु इन्द्रियाँ हमें मन के बाहर किसी वस्तु के अस्तित्व की सूचना नहीं देती जो दृष्ट वस्तु समान हो। इसका विकल्प यह है कि दृष्टार्थ के

आधार पर अदृष्टार्थ का अनुमान हो सकता है। परन्तु दृष्टार्थ से अदृष्टार्थ के अनुमान के लिये तो अनिवार्य सम्बन्ध की आवश्यकता है जो इनमें है ही नहीं हम जो देखते है उनमें कौन-सी युक्ति हमें यह विश्वास दिला सकती है कि मन के बाहर वस्तु का अस्तित्व है, क्योकि जड़ तत्व के संरक्षक स्वयं स्वीकार करते हैं कि उनमें और प्रत्यय में कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं। वस्तु प्रत्यय के अतिरिक्त जड़ द्रव्य का प्रत्यक्ष हमें कभी नहीं होता, अतः उनके सम्बन्ध का प्रश्न व्यर्थ है। हमारे ज्ञान के यथार्थ विषय प्रत्यय ही हैं। इनके अनुरूप वस्तु मानने की कोई आवश्यकता नहीं। स्वप्न तथा उन्माद की अवस्था में हम बहुत से ऐसे प्रत्ययों का अनुभव करते हैं जिनके अनुरूप वस्तु नही। अतः संवाद सिद्धान्त की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं। तात्पर्य यह है कि विचार के अनुरूप वस्तु भी हो ऐसा आवश्यक नहीं। स्वप्न में बहुत से विचार उत्पन्न होते हैं जिनके अनुरूप वस्तु नहीं होती।

३.लॉक मूलगुण तथा उपगुण में भेद के आधार पर जड़ तत्त्व की सिद्धि करते हैं। उनका कहना है कि मूलगुण मन के बाहर जड़ तत्व के वास्तविक धर्म है। उपगुणों को लॉक ने व्यक्ति तथा स्थिति के अनुसार परिवर्तनशील बतलाया है। उदाहरणार्थ रूप, गन्ध, ध्वनि आदि उपगुण है। ये उपगुण जड तत्त्व के वास्तविक धर्म नहीं, वरन् मन की भावनाएँ मात्र है। उदाहरणार्थ, उष्ण तथा शीतल मन की भावनाएं हैं। एक ही वस्तु किसी को शीतल तया दूसरे को उष्ण प्रतीत हो सकती है। बर्कले का कहना है कि यही तर्क मूलगुणों के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है। विस्तार, आकृति आदि को मूलगुण माना गया है, परन्तु उनमें भी व्यक्ति की स्थिति से परिवर्तन होता है। उदाहरणार्थ, प्रकाश की अपेक्षा कुहरे में वस्तु का स्वरूप बड़ा प्रतीत होता है। सुदूर विमान की गति समीपस्थ की अपेक्षा न्यून प्रतीत होती है।

४. लॉक के अनुसार मूलगुण का परिमाण निश्चित किया जा सकता है तथा निश्चित परिमाण की दृष्टि से व्यक्ति और स्थिति के अनुसार परिवर्तन का निराकरण हो सकता है। परन्तु यह तर्क तो उपगुणों के लिये भी दिया जा सकता है। श्वेत रंग का कागज दिन के प्रकाश में श्वेत, लाल प्रकाश में लाल, हरे प्रकाश में हरा प्रतीत होता है, तो भी उसे श्वेत कहेंगें। अतः गुण का भेद तो प्रत्यक्ष स्थिति तथा सापेक्षता पर निर्भर है, जो सभी

गुणों पर समान रूप से घटित होता है। अतः हमे यह कहने का कोई अधिकार ही नहीं कि कुछ गुण मिश्रण है तथा कुछ वस्तु-स्थित।

५. लॉक का मूलगुण तथा उपगुण में भेद ठीक नहीं। लॉक के अनुसार मूलगुण तो तत्त्व के पदार्थ धर्म है, परन्तु उपगुण जड तत्व का धर्म नहीं है, यह कहना उचित नहीं। प्रसार मूलगुण है तथा रंग उपगुण हैं। ऐसा कोई द्रव्य नहीं जिसमें प्रसार या विस्तार न हो। बर्कले का कहना है कि ऐसा कोई जड़ द्रव्य नहीं जिसका कोई रंग न हो। विस्तृत वस्तु रंगहीन नहीं हो सकती। अतः दोनों के भेद का कोई औचित्य नहीं।

६. लॉक जड़ तत्व को निष्क्रिय मानते है तथा गुण को द्रव्य की शक्ति कहते हैं। मूलगुण जड़ द्रव्य से ही उत्पन्न धर्म यहाँ विरोध स्पष्ट है। यदि जल तत्त्व निष्क्रिय हैं तो उनमें गुणों को उत्पन्न करने की शक्ति कहाँ? यदि सशक्त है तो निष्क्रिय कैसे?
दोनों बातों में विरोध है। इसी विरोध का परिहार करने के लिये बर्कले केवल आत्मा को ही सक्रिय मानते है।

उपरोक्त तरीके से यह स्पष्ट है कि मूलगुण तथा उपगुण का भेद असंगत है तथा इस भेद के आधार पर जलतत्व की सिद्धि भी मिथ्या है। वस्तुतः गुण के आश्रय रूप में बाह्य-पदार्थ (जड़-तत्त्व) की सिद्धि नहीं हो सकती, क्योंकि गुण संवेदन मात्र है, अत: उनका आश्रय या अधिष्ठान आत्मा हो सकता है, जड़ पदार्थ नहीं। आत्मा ही सभी प्रकार के अनुभवों का अभिभावक या अधिष्ठान है।

----------(०)----------